पाठ्य सामग्री

Geography B.A. Part-II, (Hon's)

Paper-III

भारत ...

Unit-III

भारत में चीनी उद्योग का वर्णन करें ?

Paper-III Group-III Unit-c

Gulam Haider

(2)-b 736

Sugar Industry of India

8/6

—भारत के उद्योगों में वस्त्र उद्योग के बाद चीनी उद्योग सबसे बड़ा महत्वपूर्ण उद्योग है। इसमें लगभग 42 करोड़ रुपये की पूंजी लगी हुई है। इस उद्योग से लगभग 48 लाख टन चीनी का वार्षिक उत्पादन होता है। और चीनी मिलों की संख्या 251 है। इस उद्योग में लगभग 1.40 लाख श्रमिक तथा लगभग 3300 उच्च शिक्षा प्राप्त नवयुवक लगे हैं। इस उद्योग से लगभग गन्ने की खेती करने वाले लगभग 2 करोड़ कृषकों को लाभ पहुंचता है। यह उद्योग अल्कोहल, कागज और कार्डबोर्ड आदि के उद्योग के लिए कच्चा माल तैयार करता है।

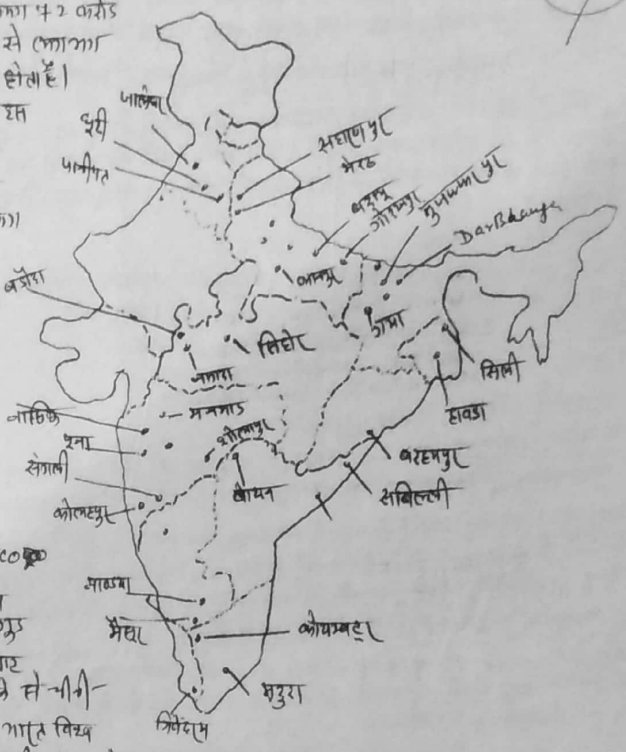

भारत लगभग संसार का 40% गन्ना अकेले ही उपजाता है। 5000 हजार वर्ष ईसा पूर्व भी हमारे देश में गन्ने की कृषि की जाती थी। ईसा से 800 वर्ष बाद चीनी लेखक इस बात का उल्लेख किया है कि गन्ने की खेती और उससे गुड़ बनाने का ज्ञान 7वीं शताब्दी में चीनी सम्राट ... ने अपने चीनी दूतों को गन्ने से चीनी बनाने के लिए भारत भेजा था। अतः भारत विश्व में सबसे अधिक गन्ना उत्पादन करते हुए भी विश्व में क्यूबा आदि के बाद चीनी उत्पादन में ~~...~~ आठवां स्थान प्राप्त है, क्योंकि यहां गन्ने से 50% गुड़ बनाया जाता है। प्राचीन

अतः भारतीय चीनी उद्योग के समक्ष निम्न लिखित समस्या है।

1. मौसमी उद्योग :– यह यहाँ का मौसमी उद्योग है। चीनी के कारखाने नवम्बर से अप्रैल तक 4-5 महीने ही चलते हैं। वर्ष में 7-8 महीने बन्द रहने के कारण चीनी का मूल्य भी ज्यादा हो जाता है।
2. गन्ने का प्रति हैक्टर उत्पादन कम :– यहाँ प्रति हैक्टर उपज कम है। अन्य देशों की चीनी उपज देखते हुए भारत की उपज प्रति हैक्टर बहुत कम है जैसे – भारत से कई देश 2 गुणी से 7 गुणी फसल उतना ही क्षेत्र में उपजाते हैं।
3. चीनी मिलों का स्थान ठीक न होना :– चीनी के कारखानों के लिए द० भारत की भूमि उपयुक्त है जबकि अधिकांश कारखाने उ० भारत में हैं। भविष्य में चीनी के कारखाने द० भारत में ही खोले जाने चाहिए।
4. गन्धक की समस्या :– चीनी बनाने में गंधक उपयोग किया जाता है, जिसका भारत में कमी है, यह अमेरिका से आयात किया जाता है जिससे चीनी पर भार बढ़ जाता है।
5. परिवहन पर अधिक व्यय :– चीनी के कारखाने कृषकों के खेतों से काफी दूर स्थित है। अतः परिवहन के सस्ते साधन न होने के कारण मिलों में गन्ना पहुंचाने में अधिक व्यय हो जाता है।
6. गन्ने का ऊंचा मूल्य :– चीनी बनाने में लगभग 51% मूल्य गन्ने का होता है, क्योंकि गन्ना वजन के अनुसार भारी होता है। कृषक किस्म की ओर ध्यान नहीं देते। इस लिए गन्ने का मूल्य ऊंचा हो जाता है। अतः गन्ने के मूल्य में कमी होने से ही सस्ती चीनी बन सकती है।
7. अनार्थिक आकार की चीनी मिलें :– यहाँ चीनी की मिलें बहुत छोटी हैं। इस लिए बड़े पैमाने की बचत सम्भव नहीं होती। इस लिए इन मिलों की उत्पादन क्षमता बढ़नी चाहिए अन्यथा इन मिलों में चीनी उत्पादन व्यय अपेक्षाकृत अधिक होता है।
8. कलों का नवीनीकरण :→ देश के चीनी कारखानों में लगी हुई मशीनें पुरानी हैं, जिससे उत्पादन व्यय अधिक हो जाता है। मिलों की कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए नये ढंग की आधुनिक मशीनें लगानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

कारखानों का नियंत्रण नहीं :— केवल बम्बई राज्य में चीनी के कारखानों के नियंत्रण में गन्ना पैदा किया जाता है और यहीं उत्पादित गन्ने वाली भूमि पर कारखानों का नियंत्रण नहीं है। गन्ने की एक अतिरिक्त व्यवस्थित हो जाती है। स्वयं की भूमि पर अथवा अपने नियंत्रण की भूमि पर गन्ना उगाया जाना चाहिए।

गौण उपजों का अधिक उपयोग न होना :— चीनी बनाते समय जो गन्ने के छिलके, शीरा आदि बनता है उसका सदुपयोग नहीं होता जबकि छिलके से कागज, पट्टे व नकली रेशम आदि बनाये जा सकते हैं। शीरे से एल्कोहल, पावर, खाद बनाने तथा पशुओं को खिलाने एवं जलावन के काम में लाया जा सकता है।

Distribution of Sugar Industry

(1) उत्तरप्रदेश :— यह राज्य भारत का 40% चीनी तैयार करता है। अतः चीनी उत्पादन में इसे प्रथम स्थान प्राप्त है। यहाँ चीनी मिलों की संख्या 78 है। यहाँ चीनी मिल दो क्षेत्रों में है :— (i) तराई क्षेत्र (ii) गंगा यमुना दोआब क्षेत्र।

तराई क्षेत्र :—

जिला	केन्द्र
देवरिया	भटनी, देवरिया, प्रतापपुर, लक्ष्मीगंज, रामकोला, गौरीबाजार आदि
गोरखपुर	सरदारनगर, पिपराइच, धुरियापार, आनन्दनगर आदि
बस्ती	बस्ती, वाल्टरगंज, खलीलाबाद, मुण्डेरवा
गोंडा	नवाबगंज, बलरामपुर
बिजनौर	बिजनौर, धामपुर, स्योहारा आदि

बाराबंकी, जौनपुर, सीतापुर, मुरादाबाद आदि

गंगा यमुना दोआब क्षेत्र :— सहारनपुर, मुजफ्फरपुर, मेरठ, नैनीताल, मुरादाबाद, बुलन्दशहर, फैजाबाद, एटा, कानपुर, पीलीभीत, बरेली, इलाहाबाद

1979 के अनुसार चीनी मिल

राज्य	मिलों की संख्या
उ० प्रदेश	78
महाराष्ट्र	41
बिहार	28
आन्ध्र प्रदेश	19
तमिलनाडु	15
उड़ीसा	4
पॉण्डिचेरी	1
कर्नाटक	11
गुजरात	8
मध्य प्रदेश	11
पंजाब	8
हरियाणा	7
केरल	2
राजस्थान	6
बंगाल	6

(2) महाराष्ट्र :→ चीनी उत्पादन में महाराष्ट्र का स्थान द्वितीय है। यह देश का 20% चीनी तैयार करता है। यहाँ मिलों की संख्या 69 है। यहाँ चीनी उत्पादन का मुख्य केन्द्र मालेगाँव, श्रीपुर, हरगाँव, तिलक नगर, बेलवाड़ी, रावलवाड़ी, लक्ष्मीवाड़ी, भंडारदरानगर, पूणे, कोल्हापुर, उदर-खुर्द और ढोला आदि है।

(3) बिहार :→ यह भारत का तीसरा महत्वपूर्ण चीनी उत्पादक राज्य है। यह देश का 10% चीनी उत्पादन करता है। यहाँ मिलों की संख्या 30 है। यहाँ निम्न जिलों में चीनी मिलें इस प्रकार हैं।

जिला	केन्द्र
सारण	सीतलपुर, मरहौरा, महाराजगंज, पंचरुखी, सिवान, सिधवलिया, गोपालगंज, हथुआ
चम्पारण	बड़ा चकिया, मोतीहारी, सुगौली, मझौलिया, चनपटिया, लौरिया, नरकटियागंज आदि
मुजफ्फरपुर	मोतीपुर, रीगा
दरभंगा	सकरी, लोहट, तारसराय, हसनपुर रोड
गया	गुराक, वारसलीगंज
रोहतास	बिक्रमगंज, डालमियानगर
भोजपुर	बक्सर
पटना	बिहटा

(4) आन्ध्र प्रदेश :→ यहाँ चीनी मिलों की संख्या 27 है। यहाँ चीनी का उत्पादन हैदराबाद, सीतानगर, निजामाबाद, सामलकोट, विजयवाड़ा आदि है।

(5) तमिलनाडु :→ यहाँ चीनी मिलों की संख्या 20 है। यह उद्योग मद्रास, उ० एवं द० आर्काट, मदुरई, तिरुचिरापल्ली

(6) बंगाल :→ यहाँ चीनी मिलें मुर्शिदाबाद जिले में बेलडाँगा, नदिया जिले में पलासी और 24 परगना में हावड़ा और बसीर घाट हैं।

(7) मध्यप्रदेश :→ यहाँ चीनी मिलों की संख्या 6 है। यहाँ चीनी का उत्पादन इंदौर, फगवाड़ा, अमृतसर आदि जगहों में होता है।

(8) हरियाणा :→ यहाँ चीनी मिलों की संख्या 5 है। यहाँ चीनी का उत्पादन धुरी, मोरिण्डपुर, जगाधरी, पानीपत और रोहतक में होता है।

भारत में चीनी का उत्पादन

वर्ष	उत्पादन (लाख टन में)
1931-32	1½
1945-46	9
1950-51	11
1955-56	11
1960-61	30
1965-66	35
1970-71	38
1977-78	57